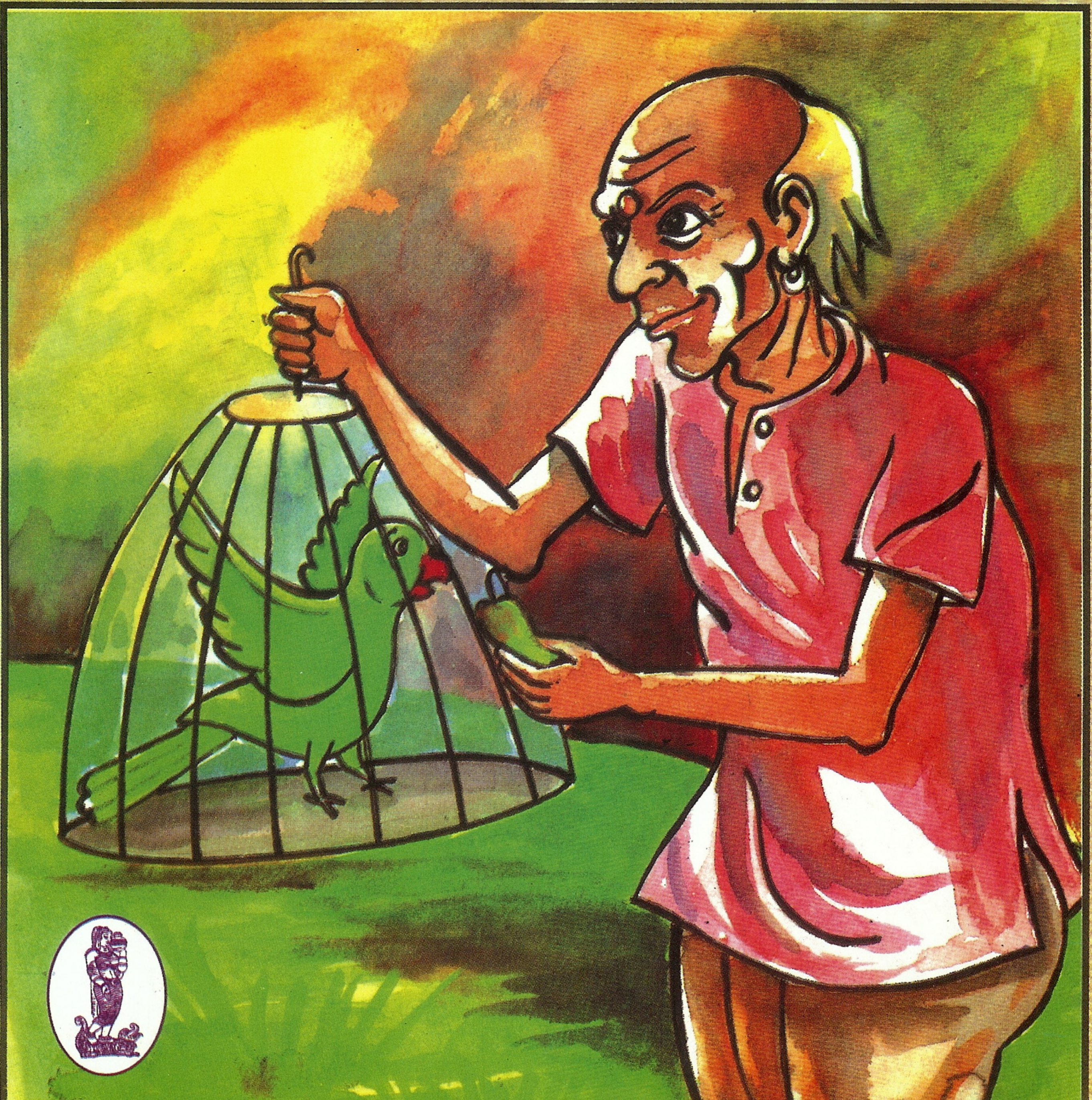
आत्माराम

प्रेमचंद



दो शब्द

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के कालजयी कथाकार हैं। विश्व साहित्य में वे भारतीय जीवन–दृष्टि और सार्थक रचनाशीलता के सर्वोत्तम हस्ताक्षर माने जाते हैं। जनपक्षधर, राष्ट्रभक्त व भविष्यद्रष्टा रचनाकार के रूप में प्रेमचंद अमर हैं। उनकी कृतियाँ व्यापक रूप से मानवीय मूल्यों को रेखांकित करते हुए समता, न्याय और स्वतंत्रता से युक्त समाज का स्वप्न देखती हैं। मुंशी प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती के अवसर पर वर्ष 2006 में उनकी पुण्य स्मृति में कई प्रकाशन योजनाओं को मूर्त रूप दिया गया था। इनमें विशेषकर किशोरवय पाठकों के लिए प्रेमचंद की कुछ चर्चित कहानियों पर आधारित चित्रकथाएं प्रमुख थीं, ताकि हमारे समाज में सकारात्मक जीवन–मूल्यों का और अधिक विकास हो सके।

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के संयुक्त प्रयास से प्रकाशित 'प्रेमचंद कथा चित्रमाला' का पुनर्मुद्रण उत्तर प्रदेश हिंन्दी संस्थान द्वारा किया जा रहा है। भारतीय समाज में प्रेमचंद साहित्य की सार्थकता सिद्ध करते हुए यह 'प्रेमचंद कथा चित्रमाला' अपनी उपयोगिता रेखांकित करेगी, ऐसी मंगल आशा है।

निदेशक
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
लखनऊ

प्रकाशक	:	निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन 6, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ
स्वत्वाधिकार	:	उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
सहयोग	:	संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ
प्रथम संस्करण	:	२००६ ई.
पुनर्मुद्रण	:	२०१६
प्रतियाँ	:	५०० (पाँच सौ)
मूल्य	:	२५.०० (पच्चीस रुपये मात्र)
संक्षिप्तीकरण व संयोजन	:	डॉ. सुशील सिद्धार्थ
चित्रांकन	:	सुधीर शर्मा
मुद्रक	:	प्रकाश पैकेजर्स, 257, गोलागंज, लखनऊ

प्रेमचंद कथा चित्रमाला : दस

आत्माराम

प्रेमचंद



संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश
एवं
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

आत्माराम

वेदी-ग्राम में महादेव सोनार एक सुविख्यात आदमी था। वह अपने सायबान में प्रातः से संध्या तक अँगीठी के सामने बैठा हुआ खट-खट किया करता था। यह लगातार ध्वनि सुनने के लिए लोग इतने अभ्यस्त हो गये थे कि जब किसी कारण से बंद हो जाती तो जान पड़ता था, कोई चीज़ ग़ायब हो गयी। वह नित्य-प्रति एक बार प्रातःकाल अपने तोते का पिंजड़ा लिये कोई भजन गाता हुआ तालाब की ओर जाता था। उस धुँधले प्रकाश में उसका जर्जर शरीर, पोपला मुँह, झुकी हुई कमर देखकर किसी अपरिचित मनुष्य को उसके पिशाच होने का भ्रम हो सकता था। ज्यों ही लोगों के कानों में आवाज़ आती-- 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता' लोग समझ जाते कि भोर हो गई।





महादेव का पारिवारिक जीवन सुखमय न था। उसके तीन पुत्र थे, तीन बहुएँ थीं, दर्जनों नाती-पोते थे। लेकिन उसके बोझ को हलका करनेवाला कोई न था। लड़के कहते, "जब तक दादा जीते हैं, हम जीवन का आनंद भोग लें, फिर तो यह ढोल गले पड़ेगी ही।" बेचारे महादेव को कभी-कभी निराहार ही रहना पड़ता। भोजन के समय उसके घर में साम्यवाद का ऐसा गगनभेदी निर्घोष होता कि वह भूखा ही उठ आता, और नारियल का हुक्का पीता हुआ सो जाता। उसका व्यावसायिक जीवन और भी अशांतिकारक था। यद्यपि वह अपने काम में निपुण था; उसकी खटाई औरों से कहीं ज्यादा शुद्धिकारक और उसकी रासायनिक क्रियाएँ कहीं ज्यादा कष्टसाध्य थीं, तथापि उसे आये-दिन शक्की और धैर्यशून्य प्राणियों के अपशब्द सुनने पड़ते थे, पर महादेव अविचलित गाम्भीर्य से सिर झुकाये सब कुछ सुना करता था। ज्यों ही यह कलह शांत होता, वह अपने तोते की ओर

देखकर पुकार उठता-- 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।' इस मंत्र को जपते ही उसके चित्त को पूर्ण शान्ति प्राप्त हो जाती।

एक दिन संयोगवश, किसी लड़के ने पिंजड़े का द्वार खोल दिया। तोता उड़ गया। महादेव ने सिर उठाकर जो पिंजड़े की ओर देखा, तो उसका कलेजा सन्न-से हो गया। तोता कहाँ गया! उसने फिर पिंजड़े को देखा, तोता ग़ायब था। महादेव घबड़ाकर उठा और इधर-उधर खपरैलों पर निगाह दौड़ाने लगा। उसे संसार में कोई वस्तु अगर प्यारी थी, तो वह यही तोता। लड़के-बालों, नाती-पोतों से उसका जी भर गया था। लड़कों की चुलबुल से उसके काम में विघ्न पड़ता था। बेटों से उसे प्रेम न था; इसलिए नहीं कि वे निकम्मे थे बल्कि इसलिए कि उनके कारण वह अपने आनंददायी कुल्हड़ों की नियमित संख्या से वंचित रह जाता था। पड़ोसियों से उसे

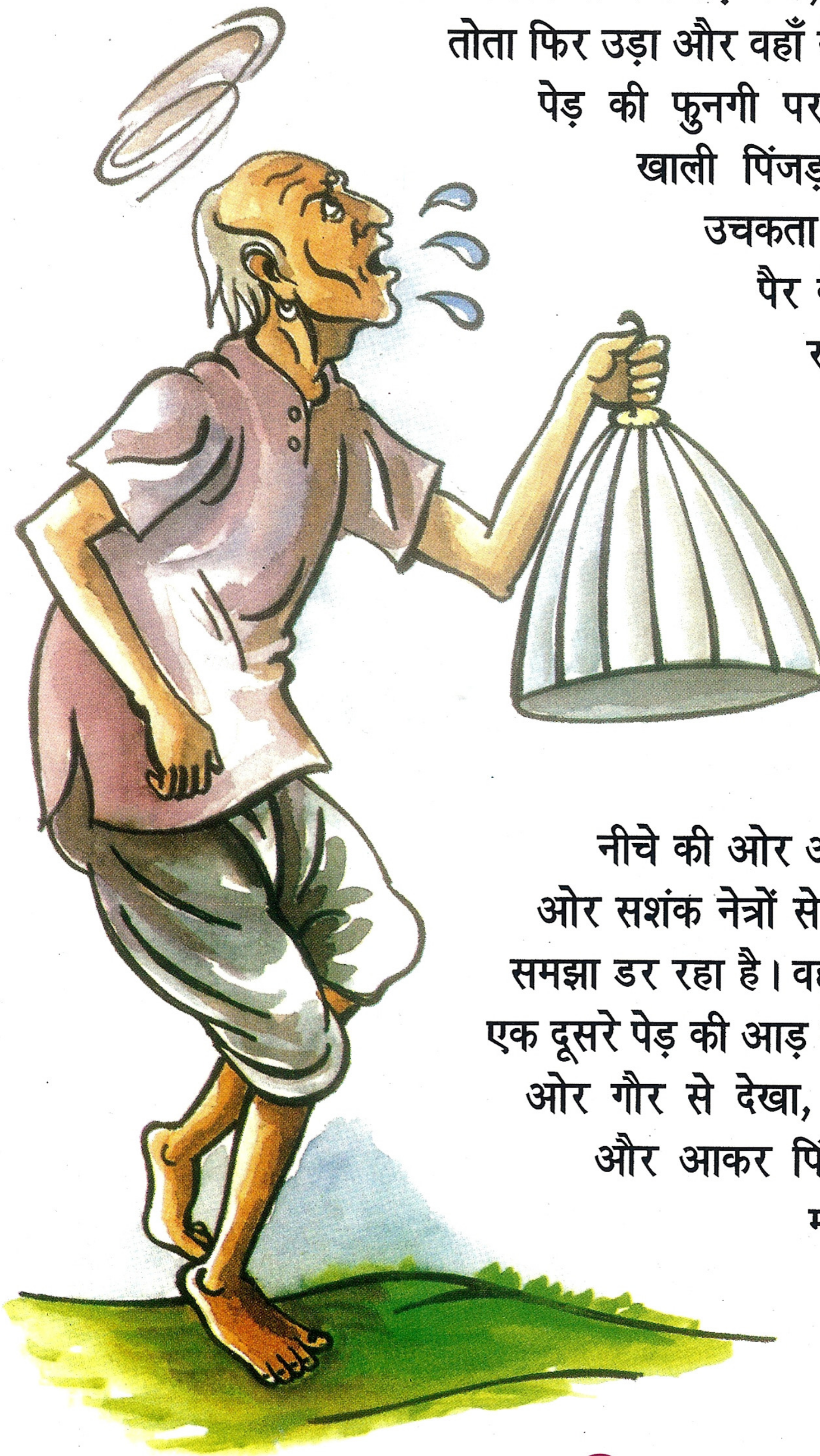




चिढ़ थी, इसलिए कि वे अँगीठी से आग निकाल ले जाते थे। इन समस्त विघ्न-बाधाओं से उसके लिए कोई पनाह थी, तो वह यही तोता था। इससे उसे किसी प्रकार का कष्ट न होता था। वह अब इस अवस्था में था, जब मनुष्य को शांति-भोग के सिवा और कोई इच्छा नहीं रहती।

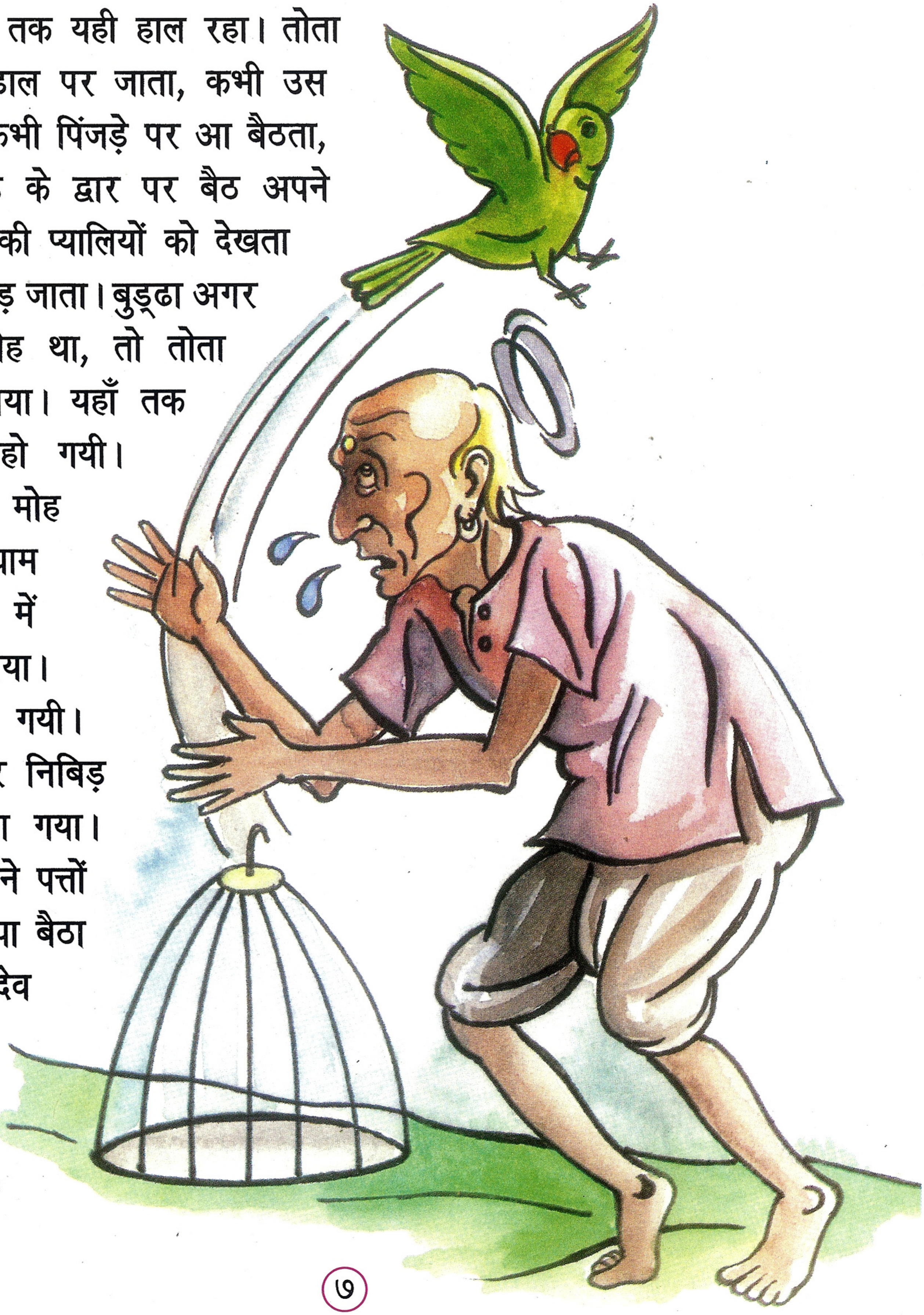
तोता एक खपरैल पर बैठा था। महादेव ने पिंजरा उतार लिया और उसे दिखाकर कहने लगा--'आ आ सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।' लेकिन गाँव और घर के लड़के एकत्र होकर चिल्लाने और तालियाँ बजाने लगे। ऊपर से कौओं ने काँव-काँव की रट लगायी। तोता उड़ा और गाँव से बाहर निकल कर एक पेड़ पर जा बैठा। महादेव खाली पिंजड़ा लिये उसके पीछे दौड़ा, सो दौड़ा, लोगों को उसकी द्रुतगामिता पर अचम्भा हो रहा था। मोह की इससे सुंदर, इससे सजीव, इससे भावमय कल्पना नहीं की जा सकती।

दोपहर हो गयी थी। किसान लोग खेतों से चले आ रहे थे। उन्हें विनोद का अच्छा अवसर मिला। महादेव को चिढ़ाने में सभी को मजा आता था। किसी ने कंकड़ फेंके, किसी ने तालियाँ बजायीं। तोता फिर उड़ा और वहाँ से दूर आम के बाग़ में एक पेड़ की फुनगी पर जा बैठा। महादेव फिर खाली पिंजड़ा लिये मेंढक की भाँति उचकता चला। बाग़ में पहुँचा तो पैर के तलुओं से आग निकल रही थी; सिर चक्कर खा रहा था। जब जरा सावधान हुआ तो फिर पिंजड़ा उठाकर कहने लगा-- 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।' तोता फुनगी से उतर कर नीचे की ओर आ बैठा; किन्तु महादेव की ओर सशंक नेत्रों से ताक रहा था। महादेव ने समझा डर रहा है। वह पिंजड़े को छोड़कर आप एक दूसरे पेड़ की आड़ में छिप गया। तोते ने चारों ओर गौर से देखा, निश्शंक हो गया, उतरा और आकर पिंजड़े के ऊपर बैठ गया। महादेव का हृदय उलझने लगा। 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त मंत्र जपता हुआ धीरे-धीरे



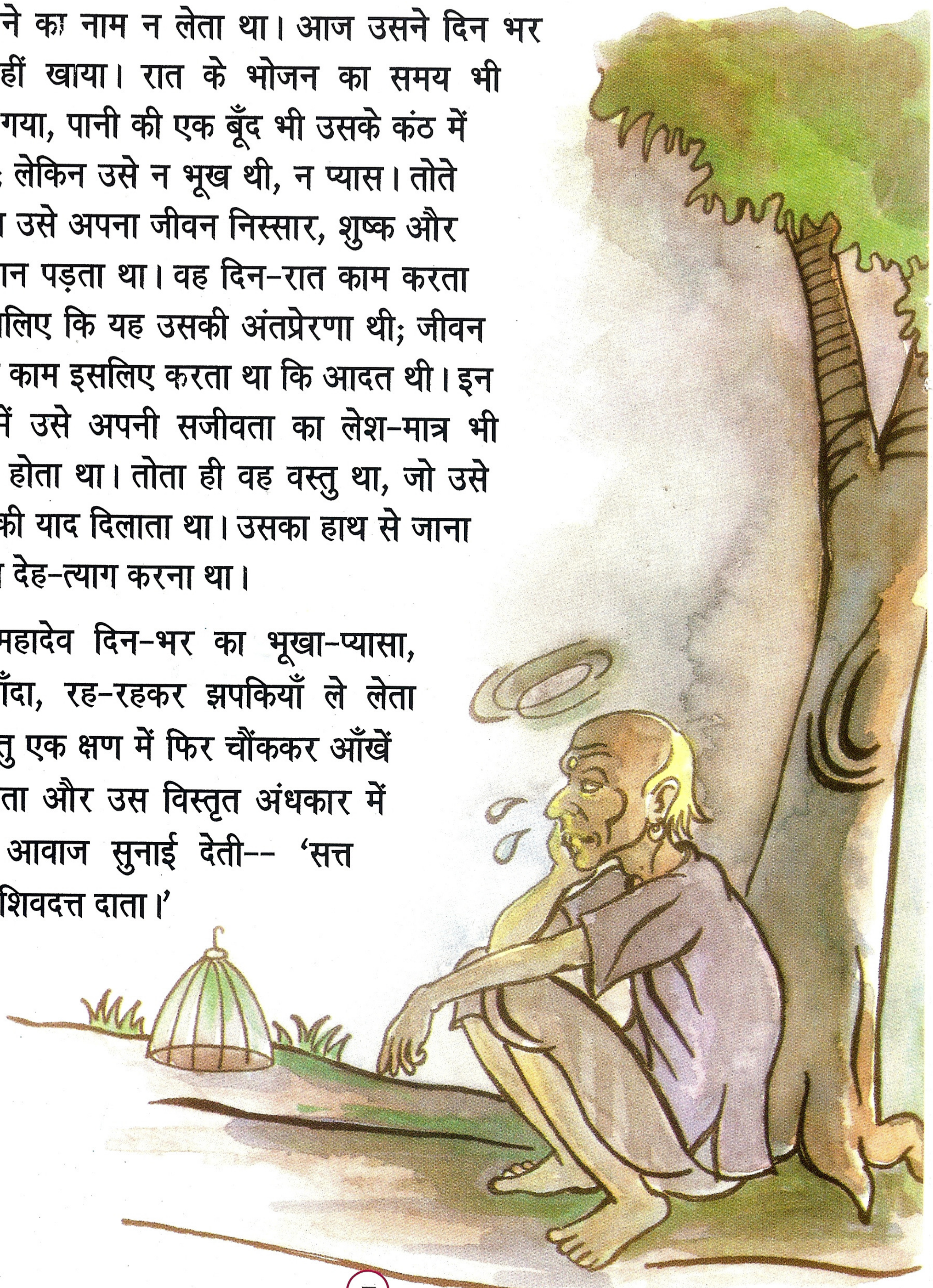
तोते के सामने आया और लपका कि तोते को पकड़ ले; किन्तु तोता हाथ न आया फिर पेड़ पर जा बैठा।

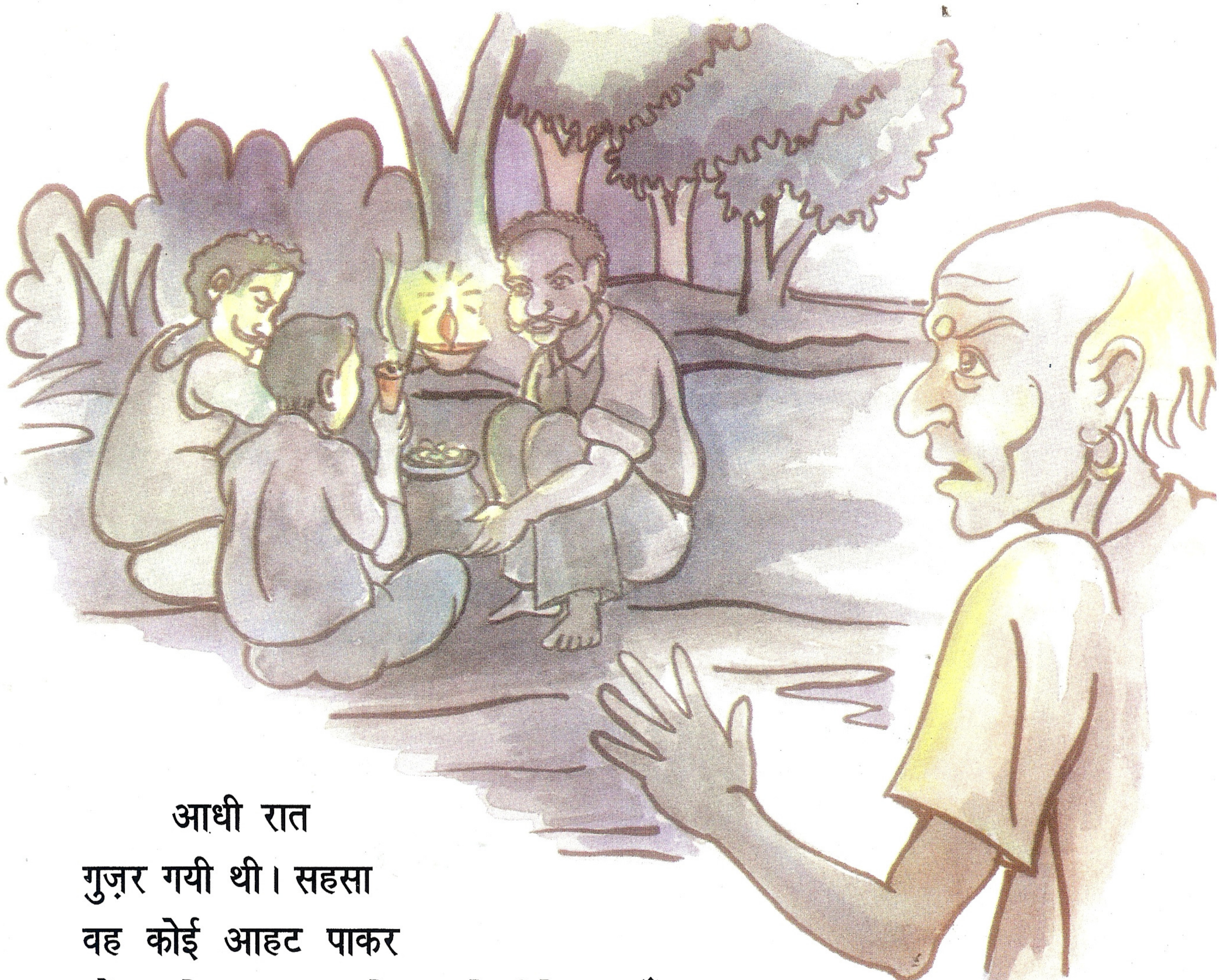
शाम तक यही हाल रहा। तोता कभी इस डाल पर जाता, कभी उस डाल पर। कभी पिंजड़े पर आ बैठता, कभी पिंजड़े के द्वार पर बैठ अपने दाना-पानी की प्यालियों को देखता और फिर उड़ जाता। बुड्ढा अगर मूर्तिमान मोह था, तो तोता मूर्तिमयी माया। यहाँ तक कि शाम हो गयी। माया और मोह का यह संग्राम अंधकार में विलीन हो गया। रात हो गयी। चारों ओर निबिड़ अंधकार छा गया। तोता न जाने पत्तों में कहाँ छिपा बैठा था। महादेव जानता था कि रात को तोता कहीं उड़कर नहीं जा सकता,



और न पिंजड़े ही में आ सकता है, फिर भी वह उस जगह से हिलने का नाम न लेता था। आज उसने दिन भर कुछ नहीं खाया। रात के भोजन का समय भी निकल गया, पानी की एक बूँद भी उसके कंठ में न गयी; लेकिन उसे न भूख थी, न प्यास। तोते के बिना उसे अपना जीवन निस्सार, शुष्क और सूना जान पड़ता था। वह दिन-रात काम करता था; इसलिए कि यह उसकी अंतप्रेरणा थी; जीवन के और काम इसलिए करता था कि आदत थी। इन कामों में उसे अपनी सजीवता का लेश-मात्र भी ज्ञान न होता था। तोता ही वह वस्तु था, जो उसे चेतना की याद दिलाता था। उसका हाथ से जाना जीव का देह-त्याग करना था।

महादेव दिन-भर का भूखा-प्यासा, थका-माँदा, रह-रहकर झपकियाँ ले लेता था; किंतु एक क्षण में फिर चौंककर आँखें खोल देता और उस विस्तृत अंधकार में उसकी आवाज सुनाई देती-- 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।'



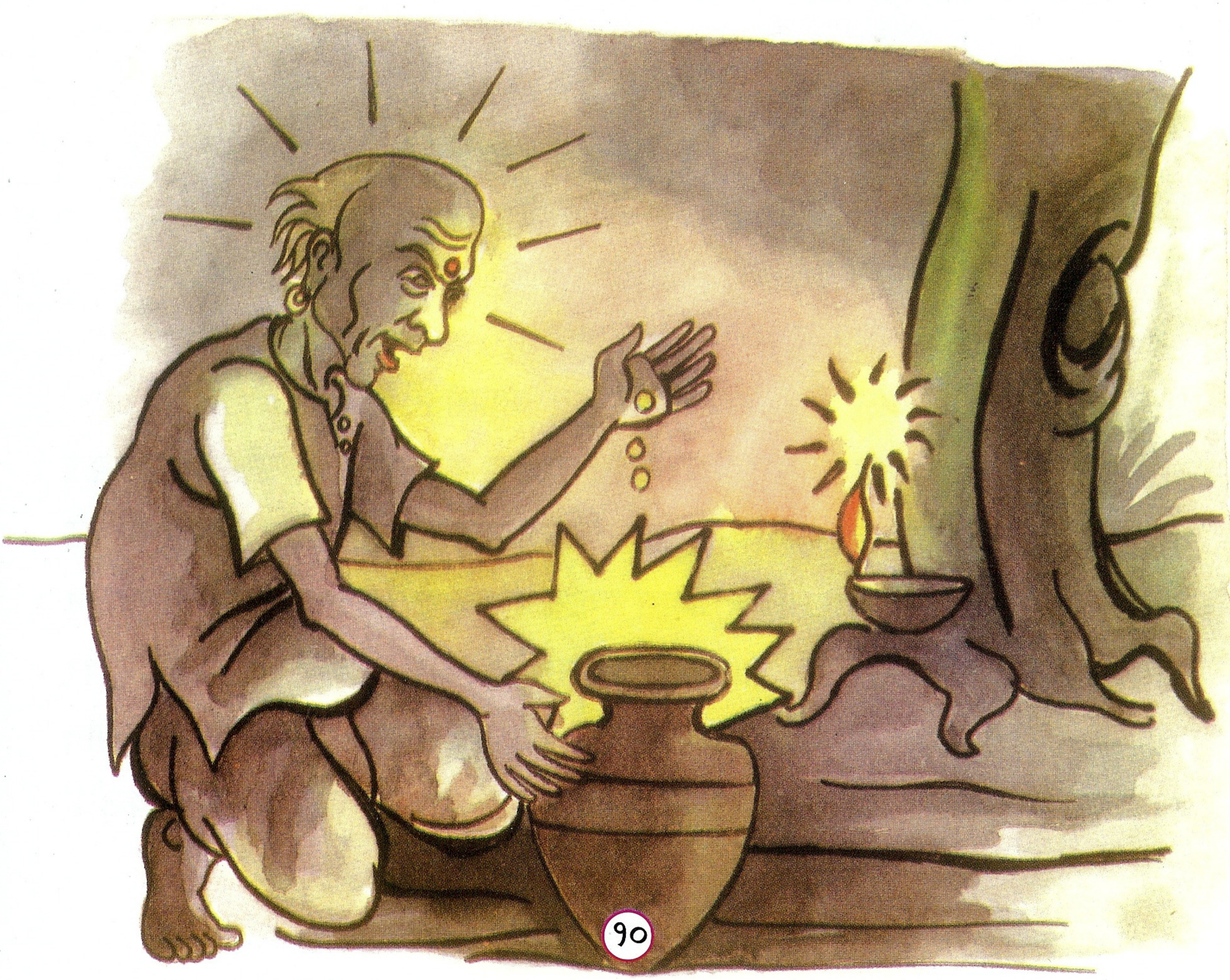


आधी रात गुज़र गयी थी। सहसा वह कोई आहट पाकर चौंका। देखा, एक दूसरे वृक्ष के नीचे एक धुँधला दीपक जल रहा है, और कई आदमी बैठे हुए आपस में कुछ बातें कर रहे हैं। वे सब चिलम पी रहे थे। तमाखू की महक ने उसे अधीर कर दिया। उच्च स्वर में बोला-- 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता' और उन आदमियों की ओर चिलम पीने चला गया; किन्तु जिस प्रकार बंदूक की आवाज सुनते ही हिरन भाग जाते हैं, उसी प्रकार उसे आते देख कर सब-के-सब उठकर भागे। कोई इधर गया, कोई उधर गया। महादेव चिल्लाने लगा-- 'ठहरो ठहरो!' एकाएक उसे ध्यान आ गया, ये सब चोर हैं। वह ज़ोर से चिल्ला उठा-- 'चोर-चोर, पकड़ो-पकड़ो!' चोरों ने पीछे फिरकर न देखा।

महादेव दीपक के पास गया, तो उसे एक कलसा रखा हुआ मिला, जो मोर्चे से काला हो रहा था। महादेव का हृदय उछलने लगा। उसने कलसे में हाथ डाला, तो मोहरें थीं। उसने एक मोहर बाहर निकाली और दीपक के उजाले में देखा। हाँ, मोहर थी। उसने तुरंत कलसा उठा लिया, दीपक बुझा दिया और पेड़ के नीचे छिपकर बैठ रहा। साह से चोर बन गया।

उसे फिर शंका हुई, ऐसा न हो, चोर लौट आवें, और मुझे अकेला देखकर मोहरें छीन लें। उसने कुछ मोहरें कमर में बाँधी, फिर एक सूखी लकड़ी से ज़मीन से मिट्टी हटाकर गड्ढे बनाये, उन्हें मोहरों से भरकर मिट्टी से ढँक दिया।

महादेव के अंतर्नेत्रों के सामने अब एक दूसरा ही जगत् था, चिन्ताओं और कल्पनाओं से परिपूर्ण। यद्यपि अभी कोष के हाथ से निकल जाने का भय था; पर



अभिलाषाओं ने अपना काम शुरू कर दिया। एक पक्का मकान बन गया, सराफे की एक भारी दुकान खुल गयी, निज सम्बन्धियों से फिर नाता जुड़ गया, विलास की सामग्रियाँ एकत्रित हो गयीं। तब तीर्थयात्रा करने चले, और वहाँ से लौटकर बड़े समारोह से यज्ञ, ब्रह्मभोज हुआ। इसके पश्चात् एक शिवालय और कुआँ बन गया, एक बाग भी लग गया और वह नित्यप्रति कथा-पुराण सुनने लगा। साधु-संतों का आदर-सत्कार होने लगा।



अकस्मात् उसे ध्यान आया, कहीं चोर आ जायँ, मैं भागूँगा क्योंकर? उसने परीक्षा करने के लिए कलसा उठाया; और दो सौ पग तक बेतहाशा भागता हुआ चला गया। जान पड़ता था, उसके पैरों में पर लग गये हैं। चिंता शांत हो गयी। इन्हीं कल्पनाओं में रात व्यतीत हो गयी। उषा का आगमन हुआ,



हवा जागी, चिड़ियाँ गाने लगीं। सहसा महादेव के कानों में आवाज आयी--

'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता,
राम के चरण में चित्त लागा।'

यह बोल सदैव महादेव की जिह्वा पर रहता था। दिन में सहस्रों ही बार ये शब्द उसके मुँह से निकलते थे, पर उनका धार्मिक भाव कभी उसके अंतःकरण को स्पर्श न करता था। जैसे किसी बाजे से राग निकलता है, उसी प्रकार उसके मुँह से यह बोल निकलता था। निरर्थक और प्रभाव-शून्य। तब उसका हृदय-रूपी वृक्ष पत्र-पल्लव विहीन था। यह निर्मल वायु उसे गुंजरित न कर सकती थी; पर अब उस वृक्ष में कोंपलें और शाखाएँ निकल आयी थीं। इस वायु-प्रवाह से झूम उठा, गुंजित हो गया।

अरुणोदय का समय था। प्रकृति एक अनुरागमय प्रकाश में डूबी हुई थी। उसी समय तोता पैरों को जोड़े हुए ऊँची डाल से उतरा, जैसे आकाश से कोई तारा टूटे और आकर पिंजड़े में बैठ गया। महादेव प्रफुल्लित होकर दौड़ा और पिंजड़े को उठाकर बोला-- "आओ आत्माराम, तुमने कष्ट तो बहुत दिया, पर मेरा जीवन भी सफल कर दिया। अब तुम्हें चाँदी के पिंजड़े में रखूँगा और सोने से मढ़ दूँगा।" उसके रोम-रोम से परमात्मा के गुणानुवाद की ध्वनि निकलने लगी। प्रभु, तुम कितने दयावान् हो! यह तुम्हारा असीम वात्सल्य है, नहीं तो मुझ जैसा पापी, पतित प्राण कब इस कृपा के योग्य था! इन पवित्र भावों से उसकी आत्मा विह्वल हो गयी। वह अनुरक्त होकर कह उठा--



'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता,

राम के चरण में चित्त लागा।'

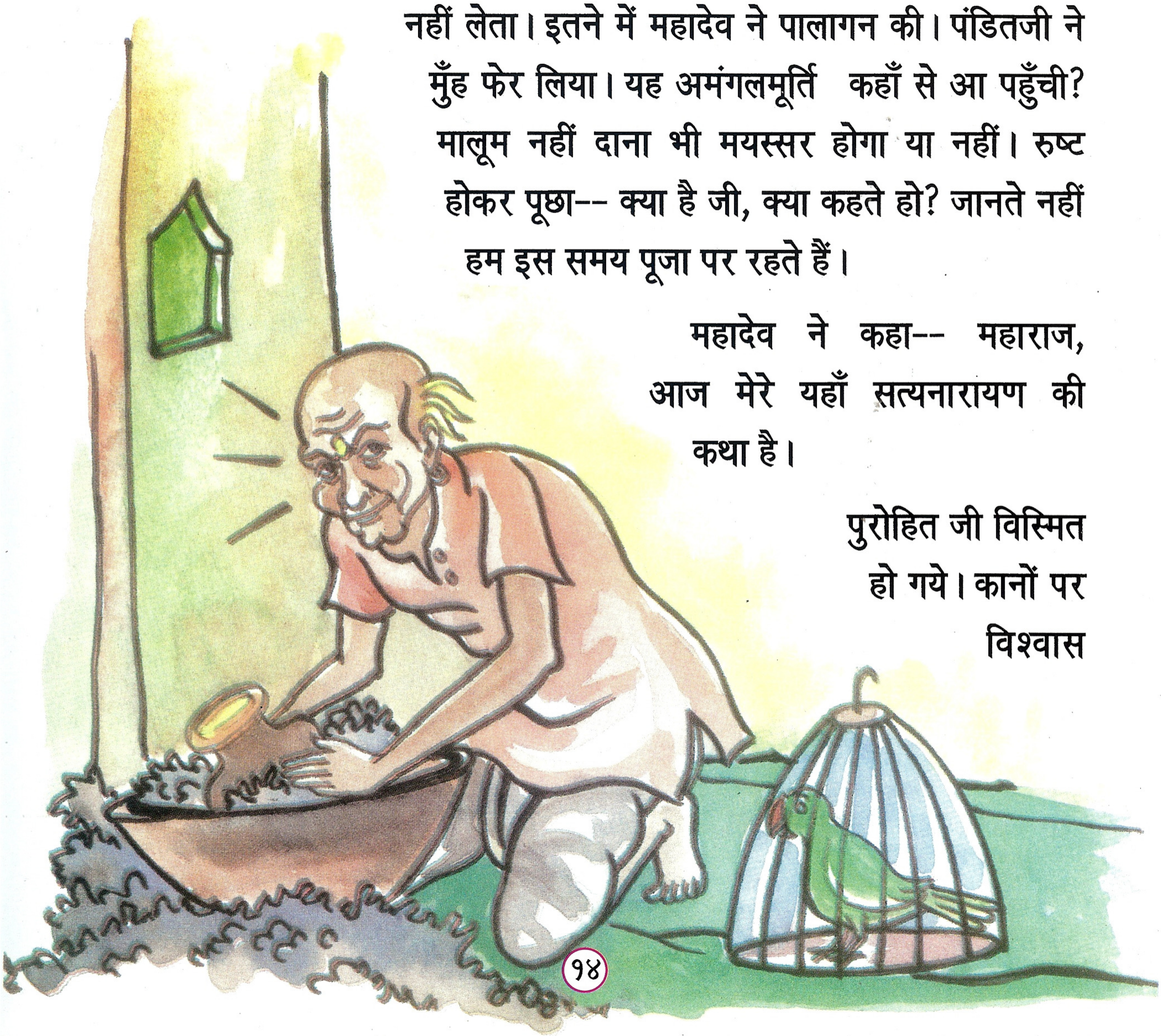
उसने एक हाथ में पिंजड़ा लटकाया, बगल में कलसा दबाया और घर चला।

महादेव घर पहुँचा, तो अभी कुछ अँधेरा था। रास्ते में एक कुत्ते के सिवा और किसी से भेंट न हुई, और कुत्ते को मोहरों से विशेष प्रेम नहीं होता। उसने कलसे को एक नाँद में छिपा दिया, और उसे कोयले से अच्छी तरह ढँककर अपनी कोठरी में रख आया। जब दिन निकल आया तो वह सीधे पुरोहित के घर पहुँचा।

पुरोहित पूजा पर बैठे सोच रहे थे-- कल ही मुकदमें की पेशी है और अभी तक हाथ में कौड़ी भी नहीं- यजमानों में कोई साँस भी नहीं लेता। इतने में महादेव ने पालागन की। पंडितजी ने मुँह फेर लिया। यह अमंगलमूर्ति कहाँ से आ पहुँची? मालूम नहीं दाना भी मयस्सर होगा या नहीं। रुष्ट होकर पूछा-- क्या है जी, क्या कहते हो? जानते नहीं हम इस समय पूजा पर रहते हैं।

महादेव ने कहा-- महाराज, आज मेरे यहाँ सत्यनारायण की कथा है।

पुरोहित जी विस्मित हो गये। कानों पर विश्वास





न हुआ। महादेव के घर कथा का होना उतनी ही असाधारण घटना थी, जितनी अपने घर से किसी भिखारी के लिए भीख निकालना। पूछा-- "आज क्या है?"

महादेव बोला-- "कुछ नहीं। ऐसी इच्छा हुई कि आज भगवान की कथा सुन लूँ।"

प्रभात से ही तैयारी होने लगी। वेदी के निकटवर्ती गाँवों में सुपारी फिरी। कथा के उपरांत भोज का भी नेवता था। जो सुनता, आश्चर्य करता। आज रेत में दूब कैसे जमी?

संध्या समय जब सब लोग जमा हो गये, और पंडितजी अपने सिंहासन पर विराजमान हुए, तो महादेव खड़ा होकर उच्च स्वर में बोला-- भाइयो, मेरी सारी उम्र छल-कपट में कट गयी। मैंने न जाने कितने आदमियों को दगा दी, कितने खरे को खोटा किया; पर अब भगवान ने मुझ पर दया की है, वह मेरे मुँह की कालिख को मिटाना चाहते हैं। मैं आप सब भाइयों से ललकार कर कहता हूँ कि जिसका मेरे जिम्मे जो कुछ निकलता हो, जिसकी जमा मैंने मार ली हो, जिसके चोखे माल को खोटा कर दिया हो, वह आकर अपनी एक-एक कौड़ी चुकता कर ले। गवाही-साखी का काम नहीं।''



सब लोग सन्नाटे में आ गये। कोई मार्मिक भाव से सिर हिलाकर बोला-- हम कहते न थे! किसी ने अविश्वास से कहा-- क्या खाकर भरेगा, हजारों का टोटल हो जायगा।

एक ठाकुर ने ठिठोली की-- और जो लोग सुरधाम चले गये?



महादेव ने उत्तर दिया-- उसके घर वाले तो होंगे!

किन्तु इस समय लोगों को वसूली की उतनी इच्छा न थी, जितनी यह जानने की कि इसे इतना धन कहाँ से मिल गया। किसी को महादेव के पास आने का साहस न हुआ। देहात के आदमी थे, गड़े मुर्दे उखाड़ना क्या जानें! फिर प्रायः लोगों को याद भी न था कि उन्हें महादेव से क्या पाना है, और ऐसे पवित्र अवसर पर भूल-चूक हो जाने का भय, उनके मुँह बन्द किये हुए था। सबसे बड़ी बात यह थी कि महादेव की साधुता ने उन्हें वशीभूत कर लिया था।

अचानक पुरोहित जी बोले-- तुम्हें याद है, मैंने एक कंठा बनाने के लिए सोना दिया था। तुमने कई माशे तौल में उड़ा दिये थे।

महादेव-- हाँ, याद है। आपका कितना नुकसान हुआ होगा?

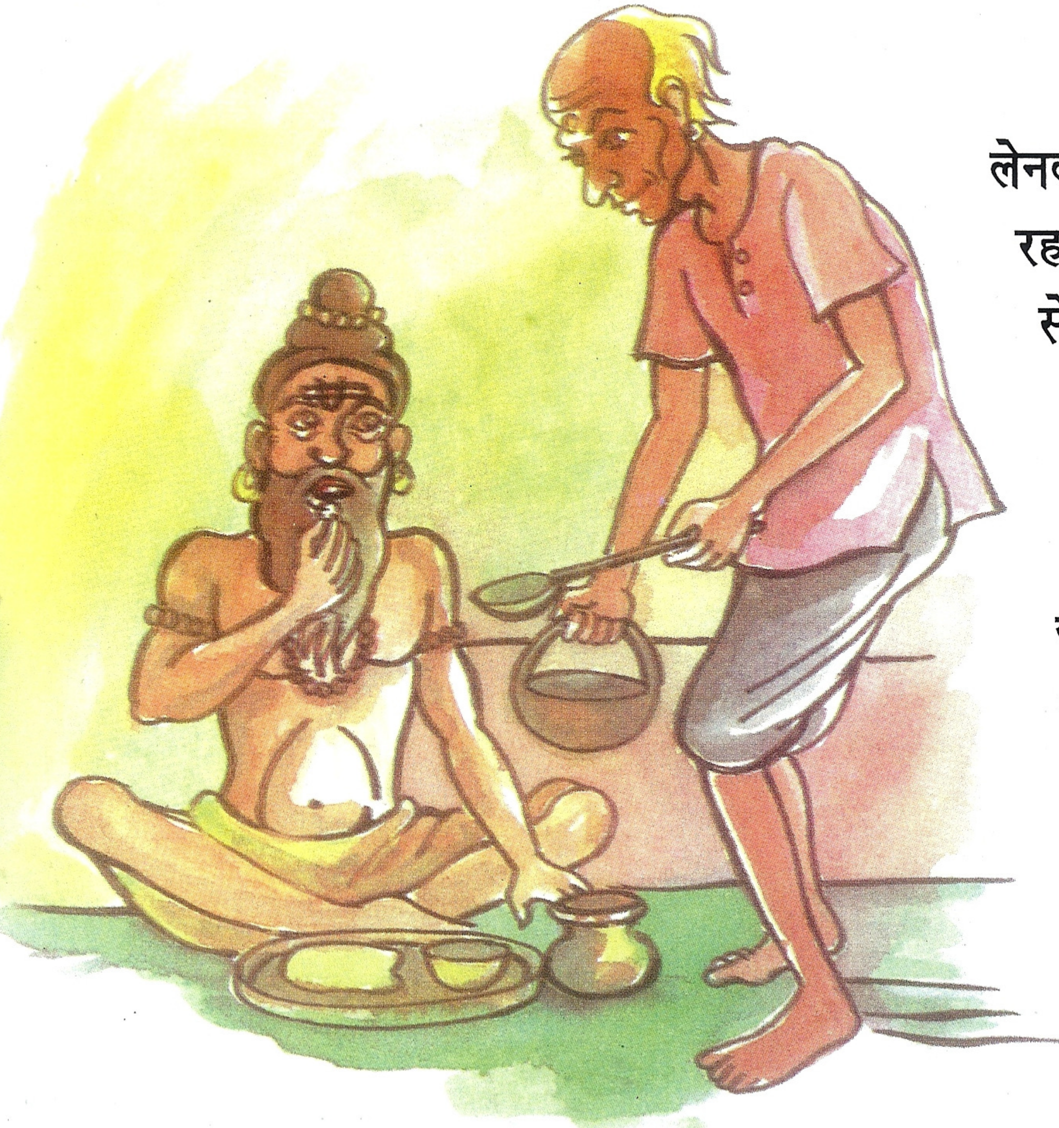
पुरोहित-- पचास रुपये से कम न होगा।

महादेव ने कमर से दो मोहरें निकालीं और पुरोहित जी के सामने रख दीं।

पुरोहित जी की लोलुपता पर टीकाएँ होने लगीं। यह बेईमानी है, बहुत हो, तो दो-चार रुपये का नुकसान हुआ होगा। बेचारे से पचास रुपये ऐंठ लिये। नारायण का भी डर नहीं। बनने को पंडित, पर नियत ऐसी खराब! राम-राम!!

लोगों को महादेव पर एक श्रद्धा सी हो गयी। एक घंटा बीत गया, पर उन सहस्रों मनुष्यों में से एक भी खड़ा न हुआ। तब महादेव ने फिर कहा-- "मालूम होता है, आप लोग अपना-अपना हिसाब भूल गये हैं, इसलिए आज कथा होने दीजिए। मैं एक महीने तक आपकी राह देखूँगा। इसके पीछे तीर्थयात्रा करने चला जाऊँगा। आप सब भाइयों से मेरी विनती है कि आप मेरा उद्धार करें।"





एक महीने तक महादेव लेनदारों की राह देखता रहा। रात को चोरों के भय से नींद न आती थी। अब वह कोई काम न करता। शराब का चसका भी छूटा। साधु-अभ्यागत जो द्वार पर आ जाते, उनको यथायोग्य सत्कार करता। दूर-दूर तक उसका सुयश फैल गया। यहाँ तक कि महीना पूरा हो गया, और एक आदमी भी हिसाब लेने न आया। अब महादेव को ज्ञान हुआ कि संसार में कितना धर्म, कितना सद्व्यवहार है। अब उसे मालूम हुआ कि संसार बुरों के लिए बुरा है, और अच्छों के लिए अच्छा।

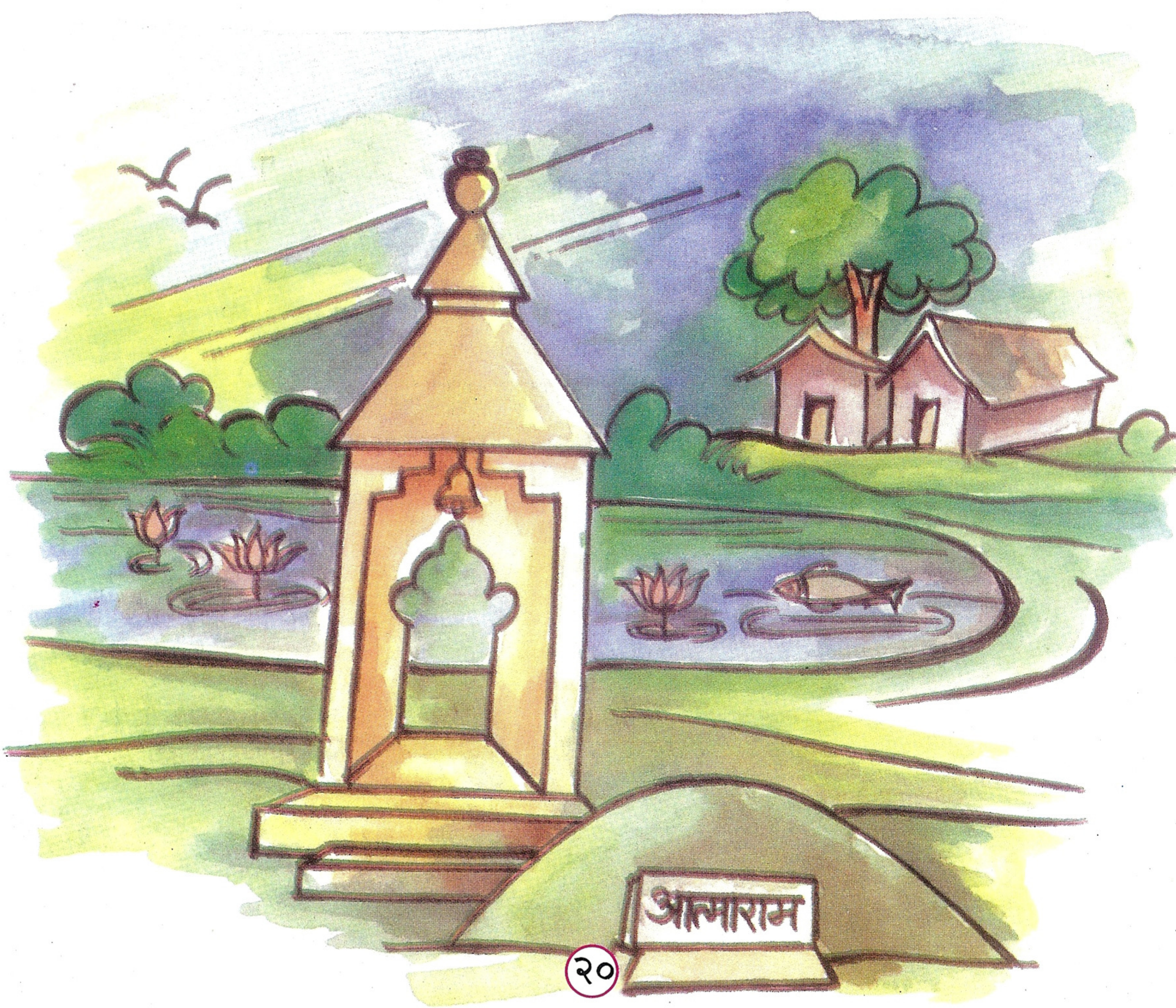
इस घटना को पचास वर्ष बीत चुके हैं। आप बेदीग्राम जाइए, तो दूर ही से एक सुनहला कलस दिखाई देता है वह ठाकुरद्वारे का कलस है। उससे मिला हुआ एक पक्का तालाब है, जिसमें खूब कमल खिले रहते हैं। उसकी मछलियाँ कोई नहीं पकड़ता, तालाब के किनारे एक विशाल समाधि है। यही आत्माराम का स्मृति-चिह्न है। उसके सम्बन्ध में विभिन्न किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कोई कहता है, वह रत्नजटित पिंजड़ा स्वर्ग को चला गया, कोई कहता है, वह 'सत्त गुरुदत्त'

कहता हुआ अन्तर्ध्यान हो गया, पर यथार्थ यह है कि पक्षी रूपी चंद्र को किसी बिल्ली रूपी राहु ने ग्रस लिया। लोग कहते हैं कि आधी रात को अभी तक तालाब के किनारे आवाज आती है--

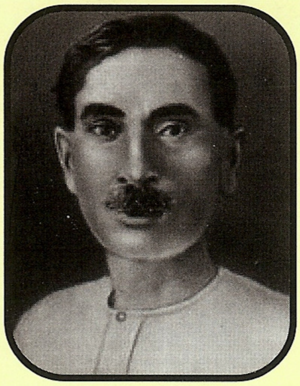
सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता,

राम के चरण में चित्त लागा।

महादेव के विषय में भी कितनी ही जन-श्रुतियाँ हैं। उनमें सबसे मान्य यह है कि आत्माराम के समाधिस्थ होने के बाद वह कई सन्यासियों के साथ हिमालय चला गया, और वहाँ से लौटकर न आया। उसका नाम आत्माराम प्रसिद्ध हो गया। ✦✦







प्रेमचंद

जन्म : ३१ जुलाई, १८८० ई.। जन्म स्थान : बनारस से चार मील दूर लमही नामक गाँव। बचपन से ही संघर्षशील और स्वाध्यायी। प्राइवेट स्तर पर बी.ए. किया। अध्ययपन से जीविकोपार्जन प्रारंभ। शिक्षा विभाग में नौकरी करते हुए सब डिप्टी इंस्पेक्टर पद तक पहुँचे। १६२० में महात्मा गांध ी से प्रेरित होकर सरकारी नौकरी का त्याग। इसके उपरान्त लेखन और सम्पादन से जीवनपर्यन्त निर्वाह। कुछ फिल्मों के लिए भी लिखा। मर्यादा, माधुरी, हंस व जागरण आदि का सम्पादन। जीवनकाल में ही उपन्यास सम्राट के रूप में प्रसिद्ध। उपन्यासों और कहानियों में आम जनजीवन के यथार्थ की प्रस्तुति। १६३६ में प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता। निधन : ८ अक्तूबर, १६३६।

उपन्यास : सेवासदन, प्रेमाश्रम, गबन, कायाकल्प, रंगभूमि, कर्मभूमि व गोदान। वरदान, प्रतिज्ञा, मनोरमा, रूठी रानी प्रारंभिक औपन्यासिक रचनाएँ।

कहानियाँ : लगभग ३०० कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में प्रकाशित।

निबंध, नाटक, आलोचक, पत्र व अनुवाद कार्य भी महत्त्वपूर्ण।

पचीस रुपये

ISBN : 978-93-82175-73-5

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश
एवं
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ